माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
अर्थशास्त्र	1	4	0	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र. भोपाल BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

319- 0737943

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

9	5	6	2	6	6	3	0
नौ	पांच	छः	दो	छः	छः	तीन	शून्य

एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में ✗ शब्दों में ✗

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 1

ग :- परीक्षा का दिनांक 20 | 03 | 19

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्र क्रमांक 561020 हायर सेकण्डरी परीक्षा-

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
(हस्ताक्षर) 20/03/19	(हस्ताक्षर)

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर ... मुद्रा
H.O.Choksey R.N.-12182	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

② [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ क्र.   कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 1

(अ)
उ. व्यक्तिगत इकाई।

(ब)
उ. स्थानापन्न वस्तुएँ।

(स)
उ. पूर्ति।

(द)
उ. परिवर्तनशील लागतें शून्य हो जाती हैं।

(इ)
उ. माँग तथा पूर्ति दोनों के द्वारा।

प्र. क्र. 2

अ. एकाधिकार में।

ब. अंतिम उपभोग वस्तुओं को।

स. प्रो. कीन्स।

द. कमी न्यूनता।

इ. मजदूरी।

3

योग पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्र. क्र. 3

अ. सत्य।

ब. सत्य।

स. असत्य।

द. असत्य।

इ. सत्य।

प्र. क्र. 4

अ. लोचपूर्ण विनिमय दर - माँग व पूर्ति शक्तियों से

ब. विदेशी विनिमय दर का निर्धारण - सरल प्रणाली।

स. अधिकतम सामाजिक लाभ का सिद्धांत - डाल्टन

द. करारोपण का सिद्धांत - समानता का नियम।

इ. बजट प्राप्तियाँ - राजस्व प्राप्तियाँ + पूँजीगत प्राप्तियाँ।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्र० क्र० 5

(अ)

उ. बजट की संरचना :— राजस्व प्राप्ति, पूंजीगत प्राप्ति व राजस्व व्यय, पूंजीगत व्यय।

(ब)

उ. 1 अप्रैल से 31 मार्च।

(स)

उ. सूत्र —

R = श्रेणी की उच्चतम मान - श्रेणी की न्यूनतम मान।

$R = L - S$

(द)

उ. आधार वर्ष के निर्देशांक का मूल्य 100 होती है।

(इ)

उ. सूत्र —

$$P_{01} = \sqrt{\frac{\Sigma P_1 q_0}{\Sigma P_0 q_0} \times \frac{\Sigma P_1 q_1}{\Sigma P_0 q_1}} \times 100$$

5

[ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 5 का अंक   कुल अंक

प्रश्न क्र.

(प्र. क्र. 6)

उ. लागत से आशय होता है, किसी वस्तु के उत्पादन में होने वाले न्यूनतम व्यय से। कोई उत्पादक किसी वस्तु के उत्पादन में जो धन या साधन व्यय करता है, उसे उस वस्तु की लागत कहते हैं।

(प्र. क्र. 7)

उ. सकल घरेलू उत्पाद (GDP) से तात्पर्य किसी देश की भौगोलिक सीमा में एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं के कुल मूल्य को उस वर्ष का सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं।

GDP = S(P) + (P) उत्पाद।

S – सेवा   P = मूल्य।

(प्र. क्र. 8) 'अथवा'

उ. जे.बी. से. के बाजार नियम – "उत्पादन अपना बाजार स्वयं तैयार करता है" अर्थात् पूर्ति अपनी माँग स्वयं उत्पन्न करती है।

इस नियम से तात्पर्य अर्थव्यवस्था में अति उत्पादन की स्थिति नहीं बनेगी।

प्रश्न क्र.

प्र. क्र. 9

उ. प्रामाणिक मुद्रा :- प्रामाणिक मुद्रा से आशय वह मुद्रा जिसका अंकित मूल्य उसमें निहित मूल्य के बराबर हो एवं यह असीमित विधिग्राह्य हो। ऐसी मुद्रा देश की प्रधान मुद्रा होती है तथा इसकी ढलाई स्वतंत्र होती है।

प्र. क्र. 10 'अथवा'

उ. डॉ. बाउले के अनुसार "अपकिरण पदों के विचलनों का अंतर है।" यह द्वितीय श्रेणी माध्य होता है तथा समंकमाला में विचलन की ...ना करता है।

प्र. क्र. 11

उ. स्थिर व परिवर्तनशील लागत में अंतर निम्न है-

क्र.	स्थिर लागत	परिवर्तनशील लागत
1.	यह किसी फर्म की स्थिर लागत होती है। जैसे - भवन, मशीन आदि।	यह किसी फर्म की परिवर्तनशील लागतें होती हैं। जैसे - मजदूरी, कच्चा माल आदि।
2.	इन्हें अप्रत्यक्ष या पूरक लागत भी कहते हैं।	इन्हें प्रत्यक्ष या प्रमुख लागत भी कहते हैं।

निरंतर

प्रश्न क्र.

३.	अल्पकाल में उत्पादन बंद करने पर भी इन्हें वहन करना पड़ता है।	ये उत्पादन बंद होने के साथ ही समाप्त हो जाती है।

(प्र॰ क्र॰ 12)

उ. माँग की लोच :- अर्थशास्त्र में माँग की लोच से तात्पर्य होता है कि किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर उसकी माँग में किस दर से परिवर्तन होगा, माँग की लोच का सिद्धांत इस बात की व्याख्या करता है। माँग की लोच का विचार 'मार्शल' ने दिया। माँग की लोच तीन प्रकार की होती है :-

1. माँग की कीमत लोच
2. माँग की आय लोच
3. माँग की ~~आड़ी लोच~~ । आड़ी लोच ।

अर्थशास्त्र में मुख्यतः माँग की कीमत लोच का उपयोग होता है जिसका सूत्र -

$$e_p = \frac{\text{माँगी जाने वाली वस्तु की कीमत में परिवर्तन का अनुपात}}{\text{वस्तु की मात्रा में परिवर्तन का अनुपात}}$$

(e_p = माँग की लोच)

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

(प्र. क्र. 13)

उ. अपकिरण के प्रमुख उद्देश्य –

1. यह द्वितीय श्रेणी का माध्य है इसका प्रमुख उद्देश्य समंकमाला के पदों का बिखराव ज्ञात करना है।

2. इसका अन्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि समंकमाला का माध्य पदों का प्रतिनिधित्व किस हद तक करता है।

3. इसका अन्य उद्देश्य विचरण की प्रकृति को ज्ञात करना एवं स्वयं विचरणशीलता को नियंत्रित करना है।

(प्र. क्र. 14)

उ. निर्देशांक के प्रमुख महत्व निम्न है –

1. आर्थिक स्थिति के ज्ञान में महत्व :- निर्देशांकों की सहायता से हम किसी समय विशेष के आर्थिक विकास की तुलना वर्तमान समय से कर पाते हैं। इसके द्वारा राष्ट्र की आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता है। ये कीमत स्तर व उत्पादन स्तर में भी स्थिति को बताते हैं।

क्रि.(त)

प्रश्न क्र.

2. उत्पादक के लिए महत्व :- एक उत्पादक निर्देशांकों की सहायता से उत्पादन संबंधी निर्णय सुलभता से ले पाता है। वह इस बात की जानकारी भी रखता है कि माल का विक्रय कब किया जाए, कच्चा माल कब खरीदा जाए आदि बातें।

3. जीवन-निर्वाह लागत के निर्धारण में महत्व :- जीवन-निर्वाह लागत सूचकांकों के द्वारा मजदूरी की न्यूनतम दरें एवं वेतनमान निर्धारण में सहायता मिलती है जिससे कि सेवायोजकों व मजदूरों के में मधुर संबंध बनते हैं। इससे हड़ताल - तालाबन्दी की स्थिति नहीं बनती।

B
S
E

प्र. क्र. 15 'अथवा'

उ. व्यष्टि अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं -

1. सूक्ष्म अध्ययन :- व्यष्टि अर्थशास्त्र की सबसे बड़ी विशेषता सूक्ष्म अध्ययन है। यह किसी भी आर्थिक समस्या का अध्ययन सूक्ष्म-स्तर पर करता है। जो लघु इकाईयों के लिए उपयोगी है।

2. कीमत यंत्र :- व्यष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन में वस्तुओं के मूल्य निर्धारण व मापन की आवश्यकता होती है, जिसका निवारण 'कीमत यंत्र' के द्वारा होता है। यह शास्त्र वस्तुओं की कीमत निर्धारण बाजार मूल्य पर होता है।

नि रंतर

प्रश्न क्र.

3. पूर्ण रोजगार की मान्यता :- व्यष्टि अर्थशास्त्र विश्लेषण करते समय 'पूर्ण-रोजगार' की मान्यता मानकर चलता है। इसका अर्थ होता है कि अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी नहीं है।

4. लघु-इकाईयों का अर्थशास्त्र :- यह अर्थशास्त्र लघु इकाईयों जैसे - एक फर्म, परिवार, निजी लोगों की सम्पत्ति का अध्ययन व आर्थिक व्यवहारों का निष्कर्ष करता है।

प्र.क्र. 16 'अथवा'

B S E

3. पूर्ण प्रतियोगिता व एकाधिकार में अंतर निम्न है -

क्र.	पूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार
1.	यह बाजार का ऐसा रूप है, जिसमें विक्रेता व क्रेता की संख्या अधिक होती है।	यह बाजार का ऐसा रूप है, जिसमें एक ही वस्तु का मात्र एक ही विक्रेता होता है।
2.	इसमें फर्में मूल्य ग्रहण-कर्ता होती हैं।	इसमें फर्म मूल्य निर्धारण करती है।
3.	फर्मों का प्रवेश व गमन सरलता पूर्वक होता है।	फर्मों के प्रवेश पर प्रभावपूर्ण रोक लगाई जाती है।

निरीक्षक

प्रश्न क्र.

५.	पूर्ति का एक छोटा भाग ही उत्पादक उत्पादित करता है।	वस्तु की समस्त पूर्ति पर एक ही उत्पादक का नियंत्रण होता है।
5.	इसमें माँग लोचदार होती है।	इसमें माँग बेलोचदार होती है।

प्र० क्र० 17 । 'अथवा'

3. व्यापारिक बैंकों के महत्व निम्नानुसार हैं —

1. बैंकिंग प्रणाली के विस्तार मे महत्व :- व्यापारिक बैंकों ने बैंकिंग प्रणाली का विस्तार सारे देश मे किया है। इन बैंकों के द्वारा ही आम-जनता भी बैंक की सुविधाएँ प्राप्त कर पाती है। देश में साख का विस्तार भी इन्हीं ने किया है।

२. आर्थिक प्रगति मे महत्व :- इन बैंकों के द्वारा पूँजी का प्रवाह निश्चितता के साथ सारे देश मे होने लगा है। उद्योगपति वर्ग अब कहीं भी उद्योग लगाने मे सक्षम हो गए है क्योंकि अब साख की प्राप्ति सभी जगह सम्भव है।

निरंतर...

प्रश्न क्र.

3. ऋण संबंधी महत्व :- व्यापारिक बैंके अपने पास की पूंजी को ऋण संबंधी के रूप में लोगों को वितरित करती हैं जिससे उनके धन संबंधी कार्य पूर्ण होते हैं। ऋण पर कुछ राशि ब्याज रूप में भी लेती हैं।

4. साख निर्माण में महत्व :- व्यापारिक बैंके अपने पास की पूंजी को उधार देकर व लोगों द्वारा जमा निक्षेपों के माध्यम से 'साख-सृजन' का कार्य करती हैं। इससे आर्थिक विकास में इन बैंकों का महत्वपूर्ण स्थान है।

प्र० क्र. 18

उ. लोचपूर्ण विनिमय दर के पक्ष में तर्क निम्न हैं-

1. आर्थिक प्रगति में सहायक :- लोचपूर्ण विनिमय दर से देश में आयात व निर्यात का नियमन किया जा सकता है। इससे देश के हित में निर्यातों की वृद्धि आयातों का प्रतिस्थापन संभव है।

2. संकटकाल में उपयुक्त :- यह प्रणाली संकटकाल में उपयुक्त होती है क्योंकि ऐसी दशा में देश में आयातों की आवश्यकता होती है जो इसमें परिवर्तन कर आसानी से बढ़ाए जा सकते हैं।

निरंतर

B
S
E

प्रश्न क्र.

3. उत्पादन स्तर में वृद्धि हेतु :- लोचदार विनिमय दर के द्वारा उत्पादन वृद्धि संभव है क्योंकि यह पूँजी सेवाओं के आयातों के समय परिवर्तन मे लाकर इससे लाभ प्राप्त किया जा सकता है तथा निर्यात के समय इसे कम कर लाभ बढ़ाया जा सकता है।

4. पूर्ण रोजगार प्राप्ति में सहायक :- यह विनिमय प्रणाली पूर्ण रोजगार की प्राप्ति को संभव बनाती है क्योंकि इससे अर्थव्यवस्था में साधनों का उचित प्रयोग करना संभव हो पाता है। यह प्रणाली माँग व पूर्ति के द्वारा निर्धारित होती है जो बाजार के तत्व हैं।

B
S
E

(प्र. क्र. 19)

उ. प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष करों में अंतर निम्न है-

क्र.	प्रत्यक्ष कर	अप्रत्यक्ष कर
1.	यह कर व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह पर प्रत्यक्ष रूप से लगाया जाता है।	यह कर व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह पर अप्रत्यक्ष रूप से लगाया जाता है।
2.	इसमें कराघात व करापात एक ही व्यक्ति पर होता है।	इसमें कराघात व करापात अलग-अलग व्यक्तियों पर होता है।

निरंतर

प्रश्न क्र.

3.	यह कर कष्टकारी होते हैं, क्योंकि इन्हें देते हुए करदाता कष्ट अनुभव करता है।	यह कर सुविधाजनक होते होते हैं, इन्हें देते हुए कर दाता को कष्ट नहीं होता।
4.	इनमें निश्चितता मितव्यय व लोच पाई जाती है।	इनमें सुविधाजनक करवंचन कठिन व बेलोचता पाई जाती है।
5.	उदा. – आयकर।	उदा. – मनोरंजन कर।

B
S
E

[प्र.क्र. २०]

ब. धनात्मक व ऋणात्मक सह-संबंध का वर्णन अग्र-लिखित है –

1. धनात्मक सह-संबंध:– धनात्मक सहसंबंध से आशय है कि दो चर श्रेणियों में परिवर्तन की दिशा का एक-समान होना। जैसे यदि किसी श्रेणी में वृद्धि हो तो संबंधित श्रेणि श्रेणी में भी वृद्धि हो एवं कमी की दशा में कमी हो।
उदाहरण :– 'पूर्ति व कीमत' आदि।

15

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

२. ऋणात्मक सहसंबंध :- ऋणात्मक सह संबंध से तात्पर्य होता है कि किसी चर श्रेणियों में परिवर्तन की दिशा का विपरीत होना अर्थात यदि एक चर में वृद्धि हो तो अन्य सम्बंधित चर में कमी हो एवं कमी होने पर वृद्धि हो।

उदा. :- 'माँग व कीमत' आदि।

प्र. क्र. २१

३. कार्ल पियर्सन गुणांक के मुख्य दोष निम्न हैं -

१. रेखीय संबंध :- कार्ल पियर्सन ने संबंधित चरों में सदैव रेखीय संबंध माना है। यह संबंध उनमें वास्तव में हो या न हो। जिससे माप या गुणांक निष्फल होता है।

२. केवल मात्रात्मक चरों के लिए :- यह गुणांक केवल मात्रात्मक या संख्यात्मक चरों के लिए उपयुक्त है। इसका प्रयोग किसी वर्णनात्मक या तथ्यात्मक चर श्रेणियों के लिए नहीं किया जा सकता।

३. चरम मूल्यों पर अधिक बल :- यह गुणांक का एक दोष यह भी है कि यह ~~मात्र~~ चरम मूल्यों से अधिक प्रभावित है, क्योंकि इसकी गणना में 'प्रमाप-विचलन' का प्रयोग किया जाता है।

निरंतर

प्रश्न क्र.

4. दो श्रेणियों के लिए ही उपयुक्त :- यह गुणांक केवल परिणाम देता है जब इनकी गणना दो चरों में हो तभी उपयुक्त। यह गुणांक आंशिक व बहुगुणी सहसंबंध में भ्रमात्मक परिणाम देता है।

5. गणना कठिन :- इसकी गणना विधि कठिन है।

प्र. क्र. २२

3. पूर्णतया लोचदार माँग :- यह अर्थशास्त्र में 'माँग की लोच' की उस स्थिति को कहते हैं, जब किसी वस्तु की मूल्य में परिवर्तन अत्यंत सूक्ष्म या नगण्य हो किन्तु उसकी माँग में परिवर्तन अत्यंत अधिक हो जाता है। यह एक काल्पनिक स्थिति है, जो सामान्य जीवन में देखने को नहीं मिलती है।

माँग वक्र :- माँग की लोच में माँग वक्र की स्थिति यह होती है कि माँग रेखा आधार रेखा के समान्तर हो जाती है।

प्रश्न क.

रेखाचित्र :-

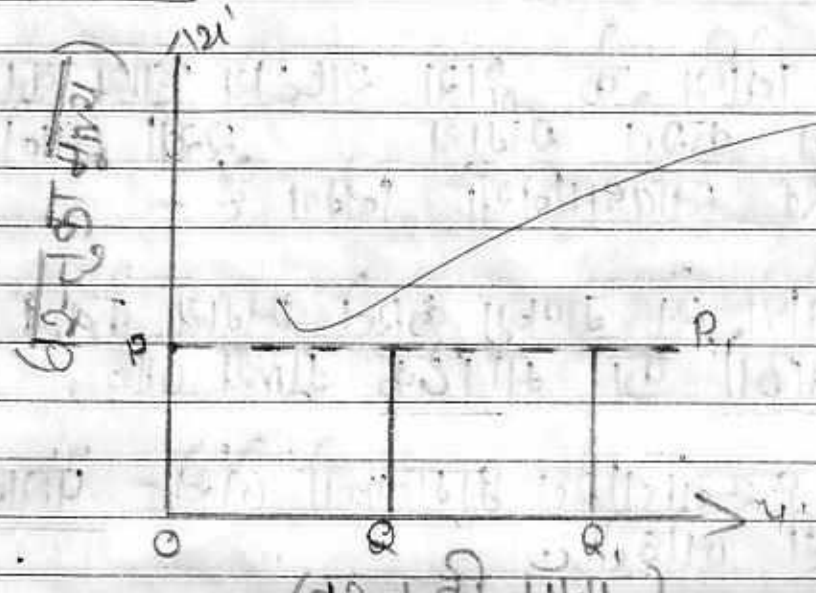

विश्लेषण :- पूर्णतया लोचदार माँग की स्थिति में, यहाँ OX' उर्ध्व रेखा व OY' आधार रेखा है। O, शून्य बिन्दु है, OP मूल्य पर वस्तु की मांगी जाने मात्रा OQ है एवं वही मात्रा पुनः बढ़कर OQ_1 हो गई है किन्तु कीमत OP यथा स्थिर है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पूर्णतया लोचदार माँग मे कीमत मे परिवर्तन नगण्य होता है।

निष्कर्ष :- यह माँग की एक काल्पनिक दशा होती है, जिसमें माँग वक्र आधार रेखा OY' के समांतर रहता है। इस कारण माँग मे परिवर्तन होने पर कीमत मे परिवर्तन नहीं होता।

इसमें माँग की लोच ($e=\infty$) अनंत होती है।

प्रश्न क्र.

(प्र. क्र 23)

5. आय विधि के द्वारा राष्ट्रीय आय का आकलन करते समय रखी जाने वाली प्रमुख सावधानियाँ निम्न है –

1. आयविधि से गणना करते समय केवल वस्तुओं व सेवाओं का मौद्रिक मूल्य जोड़े,

2. इसमें हस्तांतरित भुगतानों जैसे – पेंशन, छात्रवृत्ति दान नहीं जोड़ते,

3. तस्करी की आय, करचोरी से प्राप्त आय व अवैध आय को नहीं जोड़ते,

4. इसमें व्यक्तिगत पूर्ति की सेवा व उत्पाद का मूल्य जोड़ते हैं,

5. स्वनियोजितों की आय भी जोड़ी जाती है,

6. पुरानी वस्तुओं के विनिमय या विक्रय से प्राप्त आय नहीं जोड़ते लेकिन उनसे प्राप्त कमीशन को जोड़ा जाता है।

7. आकस्मिक आय जैसे लाटरी, सट्टा आदि की आय नहीं जोड़ते,

8. स्वयं के मालिकाने का मकान से प्राप्त किराए को शामि शामिल करते हैं।

प्रश्न क्र.

9. स्टॉक, बॉण्ड्स बिक्री के हस्तांतरण की आय नहीं जोड़ते हैं।

(प्र. क्र. 24) (अथवा)

उ. कीन्स के रोजगार सिद्धान्त की पाँच आलोचनाएँ निम्न है –

1. अल्पकालीन सिद्धान्त
2. पूर्ति पक्ष की उपेक्षा
3. स्वरक की व्याख्या न करना
4. सामान्य रूप से लागू न होना
5. अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित।

1. अल्पकालीन सिद्धांत – प्रो. कीन्स का यह सिद्धान्त अल्पकालीन है तथा अर्थव्यवस्था में अल्पकालीन साम्य पर बल देता है। अर्थशास्त्र मे अल्पकाल के साम्य की अपेक्षा दीर्घकाल के साम्य पर अधिक बल दिया जाता है जिसकी व्याख्या करने मे यह सिद्धान्त पूर्ण रूपेण असमर्थ है।

2. पूर्ति पक्ष की उपेक्षा :– प्रो. कीन्स ने अपने सिद्धान्त मे पूर्ण रोजगार प्राप्ति के लिए प्रभावपूर्ण माँग का विचार किया एवं उसमें समग्र पूर्ति- फलन को स्थिर माना लिया। लेकिन कुछ अर्थशास्त्री इसकी इस बात पर आलोचना करते है कि समग्र पूर्ति भी अल्पकाल में परिवर्तनशील हो सकती है।

निरंतर

प्रश्न क्र.

3. त्वरक की व्याख्या न करना :- यह सिद्धान्त विनियोग का उपभोग पर प्रभाव अर्थात गुणक की व्याख्या तो करता है लेकिन उपभोग का विनियोग पर प्रभाव अर्थात त्वरक की व्याख्या करने में असमर्थ रहता है। इसी दोष के कारण यह एकपक्षीय सिद्धान्त है।

4. सामान्य रूप से लागू न होना :- प्रो. कीन्स का यह सिद्धान्त केवल औद्योगिक रूप से विकसित देशों पर ही लागू होता है, यह सिद्धान्त अल्प-विकसित व पिछड़े देशों पर लागू नहीं होता। जिस कारण यह सिद्धान्त 'सामान्य' नहीं है।

5. अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित :- यह सिद्धांत पूर्ण प्रतियोगिता व बंद अर्थव्यवस्था जैसी अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है। जो आज के समय में नहीं पाई जाती है क्योंकि सारे देशों को परस्पर विनिमय करना पड़ता है।

प्रश्न क्र. (प्र.क्र. 25) अथवा !

उ. बजट के दो प्रकारों का वर्णन निम्नानुसार है-

1. संतुलित बजट
2. असंतुलित बजट।

1. संतुलित बजट :- यह बजट का एक आदर्श रूप है। इस बजट में सरकार की आय व व्यय मे समानता पाई जाती है। इस प्रकार से सरकार की कुल आगम में व कुल व्यय में संतुलन होता है। यह बजट एक सैद्धान्तिक बजट मात्र है क्योंकि शासन के आय व व्यय में असंतुलन अवश्य पाया जाता है इस बजट में होने से राजकोषों मे स्थिरता रहती है।

प्रमुख तथ्य :- 1. यह बजट आदर्श है।
2. यह मात्र काल्पनिक बजट है।
3. आर्थिक विकास स्थिर रहता है

2. असंतुलित बजट :- असंतुलन से आशय होता है कि बजट में आगम व व्यय मे असंतुलन पाया जाता है। इस प्रकार का बजट ही व्यवहार में देखने को मिलता है। इसका प्रमुख कारण अर्थव्यवस्था के लिए अतिरिक्त आय का अर्जन है।

निहार

प्रश्न क्र.

प्रमुख प्रकार :—

1. घाटे का बजट :— इस बजट के अंतर्गत शासन के कुल आगम से कुल व्यय की अधिकता रहती है। इसका प्रयोग मंदी को दूर करने के लिए होता है। यह बजट ही वर्तमान मे प्रचलित है।

2. आधिक्य का बजट :— इस बजट में सरकार के कुल व्यय, कुल आगम से कम होते है अर्थात इस बजट को 'बचत का बजट' भी कहते है। इसके द्वारा शासन के कोषो मे वृद्धि हो जाती है।

प्र. क्र. 26

उ.

श्रेणी का विस्तार = श्रेणी के उच्चतम पद का मान − निम्नतम पद का मान।

श्रेणी का (L) = 50

श्रेणी का (S) = 0

विस्तार (R) = L − S

R = 50 − 0

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

R = 50 ∴ विस्तार

विस्तार गुणांक — $\frac{L-S}{L+S}$

विस्तार गुणांक = $\frac{50-0}{50+0}$

" " = $\frac{50}{50}$

विस्तार गुणांक = 1

उ. — श्रेणी का विस्तार 50 व विस्तार गुणांक 1 है।